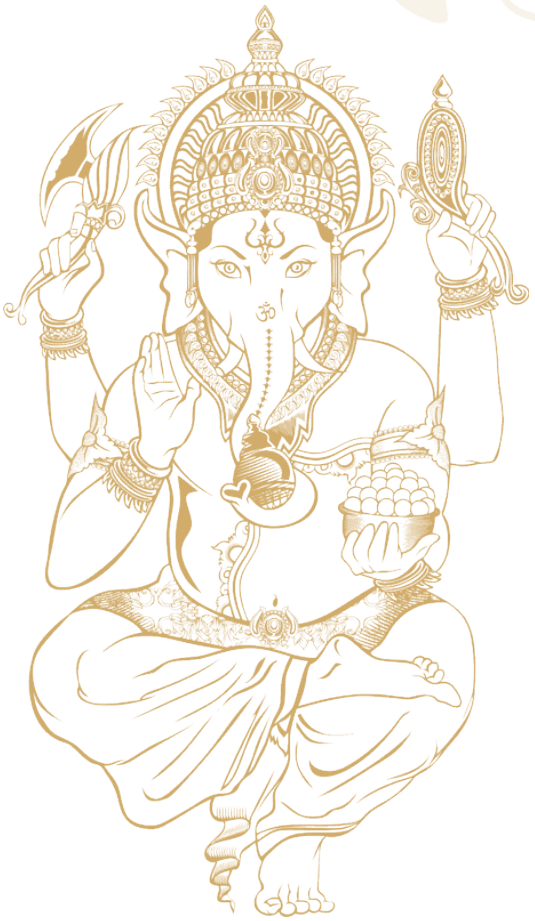

पुल्लिंग	लिंग	स्त्रीलिंग
29/04/1997	जन्म तिथि	18/09/1997
मंगलवार	दिन	गुरुवार
घंटे 20:35:00	जन्म समय	11:35:00 घंटे
घटी 37:11:18	जन्म समय(घटी)	13:38:43 घटी
India	देश	India
Delhi	स्थान	Hathras
28:39:00 उत्तर	अक्षांश	27:36:00 उत्तर
77:13:00 पूर्व	रेखांश	78:02:00 पूर्व
82:30:00 पूर्व	मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
घंटे -00:21:08	स्थानिक संस्कार	-00:17:52 घंटे
घंटे 00:00:00	ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
05:42:28	सूर्योदय	06:04:27
18:55:00	सूर्यास्त	18:19:09
23:49:09	चित्रपक्षीय अयनांश	23:49:27

विंशोत्तरी	अंश	राशि	ग्रह	राशि	अंश	विंशोत्तरी
सूर्य 0वर्ष 4मा 3दि	07:37:20	वृश्चि	लग्न	वृश्चि	12:41:46	बुध 9वर्ष 8मा 27दि
राहु	15:30:43	मेष	सूर्य	कन्या	01:32:26	शुक्र
02/09/2014	09:14:09	मक	चंद्र	मीन	22:21:29	16/06/2014
02/09/2032	22:56:23	सिंह	मंगल	तुला	28:48:56	16/06/2034
राहु 15/05/2017	08:41:13	मेष व	बुध	सिंह	13:47:08	शुक्र 16/10/2017
गुरु 09/10/2019	25:31:13	मक	गुरु व	मक	18:55:10	सूर्य 16/10/2018
शनि 15/08/2022	22:30:52	मेष	शुक्र	तुला	13:18:46	चन्द्र 16/06/2020
बुध 03/03/2025	20:04:36	मीन	शनि व	मीन	24:44:29	मंगल 16/08/2021
केतु 22/03/2026	04:06:14	कन्या व	राहु व	सिंह	25:55:31	राहु 16/08/2024
शुक्र 22/03/2029	04:06:14	मीन व	केतु व	कुंभ	25:55:31	गुरु 17/04/2027
सूर्य 13/02/2030	14:46:42	मक	हर्ष व	मक	11:11:29	शनि 16/06/2030
चन्द्र 15/08/2031	06:08:14	मक	नेप व	मक	03:28:26	बुध 16/04/2033
मंगल 02/09/2032	11:05:21	वृश्चि व	प्लूटो	वृश्चि	09:21:33	केतु 16/06/2034

लग्न-चलित

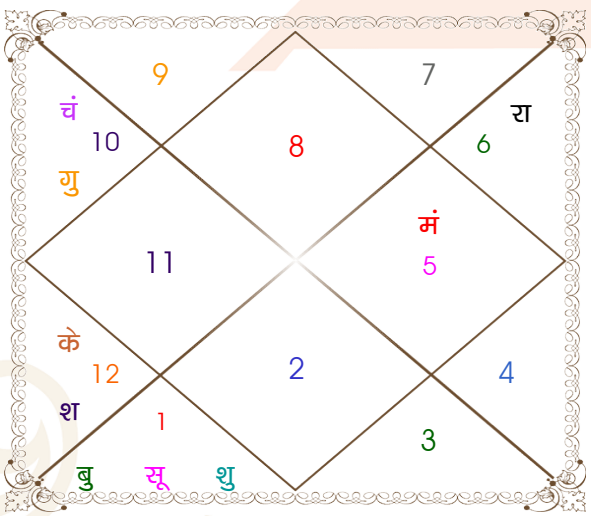

लग्न-चलित

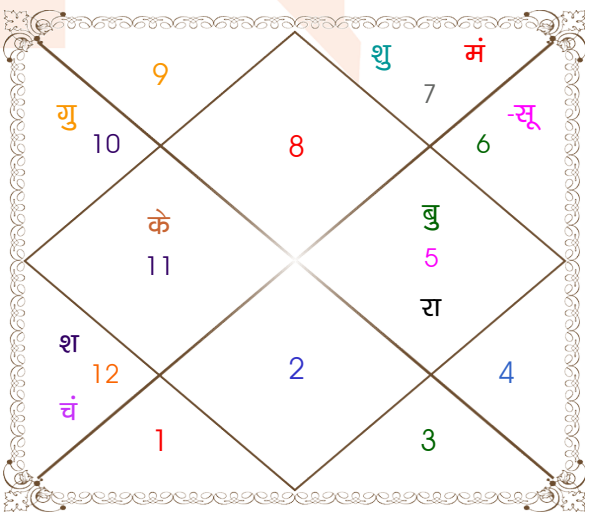

अष्टकूट गुण सारिणी

कूट	वर	कन्या	अंक	प्राप्त	दोष	क्षेत्र
वर्ण	वैश्य	विप्र	1	0.00	--	जातीय कर्म
वश्य	चतुष्पाद	जलचर	2	1.00	--	स्वभाव
तारा	क्षेम	वध	3	1.50	--	भाग्य
योनि	नकुल	गज	4	2.00	--	यौन विचार
मैत्री	शनि	गुरु	5	3.00	--	आपसी सम्बन्ध
गण	मनुष्य	देव	6	5.00	--	सामाजिकता
भकूट	मकर	मीन	7	7.00	--	जीवन शैली
नाड़ी	अन्त्य	अन्त्य	8	0.00	हाँ	स्वास्थ्य/संतान
कुल :			36	19.50		

नाड़ी दोष कष्टदायक नहीं है क्योंकि Ms. का नक्षत्र रेवती है।

Mr. का वर्ग सिंह है तथा Ms. का वर्ग सर्प है। इन दोनों वर्गों में परस्पर सम है।

अष्टकूट मिलान के अनुसार Mr. और Ms. का मिलान औसत है।

मंगलीक दोष मिलान

Mr. मंगलीक नही है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में दशम् भाव में स्थित है।

Ms. मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में द्वादश भाव में स्थित है।

व्यये च कुजदोषः कन्यामिथुनयोरविना।
द्वादशे भौमदोषस्तु वृषतौलिकयोरविना।।

अर्थात् व्यय भाव में यदि मंगल बुध तथा शुक्र की राशियों में स्थित हो तो भौम दोष नहीं होता है।

क्योंकि मंगल Ms. कि कुण्डली में द्वादश भाव में तुला राशि में स्थित है अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

त्रिषट् एकादशे राहू त्रिषट् एकादशे शनिः।
त्रिषट् एकादशे भौमः सर्वदोषविनाशकृत्।।

वर या कन्या की कुंडली में से एक मंगलीक हो और दूसरे की कुंडली में 3,6,11 वें भावों में राहु, मंगल या शनि हो तो मंगलीक दोष समाप्त हो जाता है।

क्योंकि राहु Mr. कि कुण्डली में एकादश भाव में स्थित है अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

Mr. तथा Ms. में मंगलीक मिलान ठीक है।

निष्कर्ष

अष्टकूट एवं मंगलीक दोष न होने के कारण दोनों का मिलान उत्तम हैं।